

deren Lesart müsste man die Bedeutung *Fähigkeit* annehmen. — 5) *Art und Weise zu sein, Natur, Wesen*; = स्वभाव, निर्माग AK. H. 1376. H. an. MED. परं भावमज्ञानतो मम BHAG. 9, 11. Spr. 2443 (vgl. HARIV. 8332. fg.). 4045 (zugleich Sinn). 4672. 3009. स्वयोनं मानययेय भावो भावं निगच्छति (so ist st. नियन्ति zu lesen; die Scholien: भावः स्वज्ञातिभावः भावं बुद्धिं नियच्छति मार्गात्तरादपकर्षति) so v. a. Gleiches gesellt sich zu Gleichem MBH. 13, 1878. एक° Einfalt, schlichtes Wesen Spr. 3304. एको भावः dass. 360. अदेशस्य स्थानिवद्भावः KĀC. zu P. 1, 1, 56. — 6) *Gemüthszustand, Gesinnung, Meinung, Denkart, Gefühl*; = अभिप्राय AK. H. 1393. H. an. MED. HALĀJ. कृष, क्रोध, भय sind भावाः Cit. beim Schol. zu ÇĀK. 13, 12. R. 2, 22, 16. ब्राह्मैर्विभावयेछिद्भिर्भावमत्तर्गतं नृणाम् M. 8, 25. R. GORR. 2, 1, 23. 6, 100, 1. RAGH. 2, 26. 43. भावं स्वं रते-द्विद्यात्परस्य च KĀM. NĪTIS. 12, 15. RĪGĀ-TAR. 3, 274. 4, 409. 5, 262. तद्भावभाविता und तद्भावभावित *das Sichrichten nach Jmdes Denkweise* KĀM. NĪTIS. 11, 29. 18, 3. पादशेन तु भावेन यद्यत्कर्म निषेवते *mit welcher Gesinnung* M. 12, 81. BHĀG. P. 6, 18, 26. नहि मे प्रुद्यते भावः कदा-चिद्विनशेदपि so v. a. *ich komme mit mir nicht in's Klare* N. 8, 18. मु-क्ष्यते खलु मे भावः स्वप्नो ऽयमिति मे मतिः R. 2, 88, 5 (96, 12 GORR.). वि-दितस्ते मया भावः (= मनोरथः Schol.) so v. a. *deine Gedanken* SŪRJAS. 1, 5. तस्माद्भावं दृढं कृत्वा so v. a. *einen festen Beschluss fassen* Spr. 1397. निराकृतनिमेषाभिनत्रयङ्गिभिर्मुखः नयामिन्दुकलां लोकः केन भावेन पश्यति *mit welchem Gefühle* ad ÇĀK. 23, 7. येन येन तु भावेन यद्यद्दानं प्रयच्छति । तत्तत्तैव भावेन प्राप्नोति प्रतिपूजितः ॥ M. 4, 234. °स्खलि-तानि VIKR. 89. यदा भावं न कुरुते सर्वभूतेषु पापकम् *böse Gedanken haben* HARIV. 1641. यदा न कुरुते भावं सर्वभूतेष्वमङ्गलम् Spr. 4807. दुष्ट° adj. f. स्त्री) *eine böse Gesinnung haben* d. Hip. 2, 27. MBH. 3, 2347. R. 1, 22, 14. 66, 19. 3, 49, 56. सु° R. GORR. 2, 10, 28. दुष्टभावता R. SCHL. 1, 3, 11. वि-प्रदुष्ट° M. 2, 97. पापाभिन्नमात्रा R. 2, 39, 20. शुद्ध° eine reine Gesinnung habend MBH. 13, 748. त्रिप्रदुष्ट° R. GORR. 2, 10, 28. °शुद्धि Reinheit der Gesinnung Spr. 2041. 4723. °संशुद्धि BHĀG. 17, 16. KĀM. NĪTIS. 2, 31. In der Rhet. *die erste Regung des Gemüths, Affect* überh.: निर्विकारात्मके चित्ते भावः प्रथमविक्रिया SŪB. D. 51, 3. 7, 1. 7. 50, 12. 19. 51, 10. रसा-भिज्ञानयोग्यत्वं भाव इत्यभिधीयते PRATĀPAR. 53, a, 5. स्थायिन्, संचारिन्, माद्विक SŪB. D. 76, 12. रत्यादिः स्थायी भावः 22, 12. Verz. d. B. H. No. 824. H. 293. शृङ्गार° AK. 1, 1, 2, 32. कृत्वभावत्रिलासाध्यान्कुर्वतो ऽभि-नयान् MĀRK. P. 106, 60. भावकवहेलास्त्रयो ऽङ्गनाः (अलंकाराः) H. 509. = विकारो मानसः AK. 1, 1, 2, 21. HALĀJ. 1, 90. = शृङ्गारदिः कारणम् H. an. = रत्यादि MED. = अभिनयान्त्र TRIK. 3, 3, 419. — 7) *Voraus-setzung, Vermuthung*: न भिन्नाभाडे भुञ्जीत न भावप्रतिद्वेषिते M. 4, 63. ASUTĀV. 1, 13. — 8) *Sinn einer Rede*, = अभिप्राय (s. oben u. 6.) Spr. 4043. Verz. d. Oxf. H. 243, b, 1. भारतभावप्रदीप (s. bes.) und भावदीप (s. bes.). इति भावः am Schlusse einer Erklärung in Commentaren un- zahlige Male. — 9) *das Gefühl der Liebe, Zuneigung*: स्नेहाद्वावो ऽनु- रागश्च प्रज्ञे विषये तथा MBH. 3, 75. वद्भावभक्ताः 196. 12, 4268. इति मवा भजते मां बुधा भावसमन्विताः (*contemplandi facultate praediti* SCHL.) BHĀG. 10, 3. माद्री स्वलंकृतां दृष्ट्वा पाण्डुर्भावं चक्रे *fasste Liebe zu ihr* MBH. 1, 3817. पितेव पुत्रेषु स तेषु भावं चक्रे 3, 909. MATSJO. 11. तस्मिन् — बन्ध सा न — कुमुदती भानुमतीव भावम् RAGH. 6, 36. अनु-

दिनाधिकबद्धभावा KATHĀS. 49, 249. अतो वराङ्गना बद्धभावा मयि 17, 127. मयि भावो निवर्त्यताम् MĀRK. P. 74, 31. ÇĀK. 34. 26, 17. 86, 14. °ग्रन्थ MĀLAV. 38. °स्य verliebt KUMĀRAS. 5, 58. BHĀG. P. 9, 14, 23. BRAHMA-P. in LA. (II) 37, 10. कमपरमवर्णं न विप्रकुर्युर्विभुमपि तं यदमी स्पृशति भावाः KUMĀRAS. 6, 95. सर्वभावैरनाश्रित्य पुराणं पुरुषोत्तमम् PAÑĒAR. 4, 2. 20. DHŪRTAS. in LA. 73, 15. अनन्यभावा R. 2, 27, 22. परभावा MBH. 3, 7071. — 10) *der Sitz der Gefühle, das Herz, Gemüth*; = घातम् AK. 3, 4, 22, 209. H. an. MED. HALĀJ. 5, 64. °प्राक्त्य ÇVETĀCV. Up. 5, 14. सर्वभू-तानां भावे विचरता — मन्मथेन MBH. 1, 6014. (तस्य) गतो भावम् 12, 4263. °स्थिराणि जन्मात्तरसौहृदानि Spr. 4930. परितुष्टेन भावेन M. 4, 227. °समाहितं 6, 43. यदा भावेन भवति सर्वभावेषु निःस्पृहः 80. यदा मन्येत भावेन हृष्टं पुष्टं बलं स्वकम् 7, 171. भावे हि विद्यते देवस्तस्माद्भावो हि कारणम् Spr. 1350. VRDDHA-KĀN. 8, 10. काष्ठपाषाणधातूनां कृत्वा भावेन सेवनम् 11. अनुक्तो ऽस्मि भावेन धातुर्म् R. 2, 21, 16. °स्निग्ध Spr. 2042. 4633. अनन्येनैव भावेन गच्छत्युत्तमपुरुषम् LĀ. (II) 87, 5. विरक्तभावा 5313. — 11) *das Seiende, Ding*, = पदार्थ TRIK. 3, 2, 21. 3, 419. MED. = वस्तु H. an. भावो विनश्यति *jedes Ding vergeht* KĀP. 1, 44. 81. ASUTĀV. 18, 42. यथा सुदीप्तात्पावकादिस्फुलिङ्गाः सद्ब्रह्मणः प्रभवते सत्त्वाः । तथा-त्तराद्विधाः सोम्य भावा प्रजायन्ते तत्र चैवापि यन्ति ॥ MUNI. Up. 2, 1, 1. सर्वभावपरित्यागो योग इत्यभिधीयते MAITRĀJ. 6, 25. सर्वभावेषु निःस्पृहः M. 6, 80. 12, 24. BHĀG. 7, 12. MBH. 1, 39. अचित्त्याननुताम्भावान्दर्श सु-ब्रह्मन् 3, 9969. 13, 2850. R. 2, 94, 18. अतिविप्रतो भावान्कान् SUGR. 2. 370, 1. ASUTĀV. 7, 4. 14, 1. VARĀH. BRH. S. 42, 14. लघुनूत्रमयन्भावान्गु-नप्यवपातयन् । वातुं विधिरिवाग्नें प्रचापश्च प्रभञ्जनः ॥ KATHĀS. 23, 42. RĪGĀ-TAR. 4, 498. Spr. 3319. 4087. BHĀG. P. 1, 2, 33. 6, 1, 41. माया अस-तो ऽपि भावानुपदर्शयन्ती PRAB. 15, 1. KUSUM. 39, 2. अतीन्द्रियेष्वप्युपपन्न-दर्शनो बभूव भावेषु *übersinnliche Dinge* RAGH. 3, 41. — 12) *Wesen, Ge- schöpf*; = जन्तु TRIK. 3, 3, 419. H. an. MED. भावाः ऽद्यावज्जङ्गमाः so v. a. *Pflanzen und Thiere* Spr. 4067. कः पुनर्मानुषो भावो (= पूज्यतमः Schol.) रणो यार्थं विज्ञेयसि (so die ed. Bomb.) MBH. 3, 15853. — 13) *im Drama ein kluger, gescheidter Mann* AK. 1, 1, 2, 12. H. 372. H. an. MED. HALĀJ. 1, 99. *ein in Ansehen stehender Mann* TRIK. 3, 3, 419. so v. a. *gnädiger Herr* (vgl. भावमिश्र und भवत् 2.) MĀRK. 43, 14. 21. MĀLAV. 3, 8. MĀLATI. 2, 13. 21. — 14) *N. des 8ten (42sten) Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* VARĀH. BRH. S. 8, 31. WEBER, GJOT. 98. Verz. d. Oxf. H. 331, b, No. 782. Journ. of the Am. Or. S. 6, 180. — 15) *ein astrologisches Haus* Ind. St. 2, 256. 273. fg. 281. °विचार Verz. d. B. H. No. 876. °फलानि 868. 876. भावाध्याय 837. 869. 883. — 16) *N. des 27sten Kalpa (s. कल्प 2, d.)* Verz. d. Oxf. H. 32, a, 3. — 17) = मिश्रभाव N. pr. des Verfassers des Bhāva prakāṣa Verz. d. Oxf. H. 309, b, No. 743. — Die indischen Lexicographen kennen noch folgende Bedd.: लीला und विभूति H. an. MED. योनि H. an. DHAR. im ÇKDR. उपदेश DHAR. संसार ANEKĀRTHAK. im ÇKDR. Vgl. अ°, अन्त्य° (*Ver-änderung* SUGR. 1, 113, 5. 147, 7), इत्थं° (auch Schol. zu KĀTJ. Çr. 122, 12. 13), कृत°, तनु°, दुर्नीति°, दंढ°, नित्य°, नून°, पुत्र°, पुनर्भाव°, पूर्व°, पृथग्भाव°, प्रकृति°, प्रति°, प्राग्भाव°, प्राप्त°, प्रेत°, प्रेत्य°, प्रेम°, प्रेष्य°. बाल°, ब्रह्म° (auch NĪLAK. 33), भङ्गि°, यथा°, युगपद्भाव. श्रो°, स्व°, सात्ताद्भाव.

भावक (vom caus. von 1. भू und von भाव) 1) adj. a) *Etwas werden*